

HINDI FILE



DREAM
FOR NATION



DARE
TO SERVE



DELIVER
WITH INTEGRITY

DAILY PRACTICE QUESTIONS

BEST FOR UPSC | UP PCS EXAM

DATE : **AUGUST 24, 2026**



Comprehensive
Coverage



Exam-Focused
Analysis



Concept Clarity
& Insights



Practice MCQs
with Explanation



Daily Updates,
Better Results



CONTACT INFO:

+91 92896 33341 | +91 96679 33341



EMAIL ID:

info@sixsigmaias.com



WEB PAGE:

www.sixsigmaias.com



ADDRESS:

C-6, GROUND FLOOR, SECTOR 2,
NEAR SECTOR 15 METRO STATION, NOIDA – 201301, UTTAR PRADESH

दैनिक अभ्यास प्रश्न - स्थैतिक भाग से

Q.1. प्रारंभिक ऐतिहासिक भारत के राजनीतिक और आर्थिक संरचनाओं के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. प्रारंभिक ऐतिहासिक काल में शहरी केंद्रों का उद्भव व्यापारिक नेटवर्क के विस्तार, विशेषीकृत उत्पादन और सिक्कों के बढ़ते उपयोग के साथ निकटता से जुड़ा हुआ था।
2. नगरों के उदय के परिणामस्वरूप अनिवार्य रूप से ग्रामीण बस्तियों का पतन हुआ क्योंकि कृषि उत्पादन आर्थिक रूप से शहरी वाणिज्यिक गतिविधियों के अधीन हो गया।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) दोनों कथन
- (c) न तो एक और न ही दो
- (d) केवल कथन 1

उत्तर: (d) केवल कथन 1

विस्तृत व्याख्या:

- **कथन 1 सही है।**

प्रारंभिक ऐतिहासिक नगरों की वृद्धि कृषि के विस्तार, शिल्प विशेषज्ञता, दूरस्थ व्यापार, मुद्राकरण और राजनीतिक केंद्रों के उद्भव सहित कई परस्पर जुड़ी प्रक्रियाओं से जुड़ी हुई थी। इसलिए, शहरीकरण एक पृथक जनसांख्यिकीय घटना नहीं थी; यह उत्पादन, विनिमय और राजनीतिक सत्ता के संगठन में आए परिवर्तनों को दर्शाती थी।

- **कथन 2 गलत है।**

शहरीकरण का अर्थ ग्रामीण बस्तियों का पतन नहीं था। वास्तव में, नगर भोजन, कच्चे माल और श्रम के लिए मौलिक रूप से आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों पर निर्भर थे। नगरों का विकास और ग्रामीण उत्पादन का विस्तार एक साथ (समकालीन रूप से) हो सकता था।

प्रमुख विश्लेषणात्मक जाल "अनिवार्य रूप से" (necessarily) शब्द है। प्रारंभिक शहरीकरण को गांवों और नगरों के बीच शून्य-योग (zero-sum) प्रतिस्पर्धा के रूप में देखने के बजाय एक परस्पर निर्भर ग्रामीण-शहरी आर्थिक प्रणाली के हिस्से के रूप में समझा जाना चाहिए।

शहरी केंद्र राजनीतिक राजधानी, प्रशासनिक केंद्र, वाणिज्यिक हब और विशेषीकृत शिल्प उत्पादन के स्थानों के रूप में कार्य कर सकते थे। इसके साथ ही, ग्रामीण क्षेत्र कृषि अधिशेष और कच्चे माल की आपूर्ति करते थे जो इन शहरी अर्थव्यवस्थाओं को बनाए रखते थे।

इस प्रकार, नगरों का उद्भव शहरी समाज द्वारा ग्रामीण समाज के प्रतिस्थापन के बजाय आर्थिक संबंधों के पुनर्गठन और सुदृढ़ीकरण का प्रतिनिधित्व करता था।

Q.2. निम्नलिखित में से कौन सा पारिस्थितिक पिरामिडों के पारिस्थितिक महत्व का सबसे उपयुक्त वर्णन करता है?

- (a) वे अनिवार्य रूप से निरपेक्ष मात्रात्मक पदों में प्रत्येक पोषण स्तर पर उपलब्ध वास्तविक बायोमास (जैव भार) और ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- (b) वे एक पारिस्थितिकी तंत्र में पोषण संबंधों का एक आलेखीय (ग्राफिकल) निरूपण प्रदान करते हैं, हालांकि विभिन्न प्रकार के पिरामिड अलग-अलग पैटर्न दिखा सकते हैं।
- (c) वे प्रदर्शित करते हैं कि उत्पादकों का बायोमास हमेशा सभी उपभोक्ताओं के संयुक्त बायोमास से अधिक होता है।
- (d) उनका निर्माण केवल स्थलीय पारिस्थितिक तंत्रों के लिए किया जा सकता है क्योंकि जलीय पारिस्थितिक तंत्रों में स्पष्ट रूप से पहचानने योग्य पोषण स्तर नहीं होते हैं।

उत्तर: (b)

विस्तृत व्याख्या:

एक पारिस्थितिक पिरामिड एक पारिस्थितिकी तंत्र की पोषण संरचना का प्रतिनिधित्व करता है। जिसे मापा जा रहा है उसके आधार पर, यह निम्नलिखित का पिरामिड हो सकता है:

- संख्या का;
- बायोमास (जैव भार) का; या
- ऊर्जा का।

महत्वपूर्ण अंतर यह है कि इन पिरामिडों का आकार अनिवार्य रूप से एक जैसा नहीं होता है।

ऊर्जा का पिरामिड हमेशा सीधा होता है क्योंकि उच्च पोषण स्तरों पर जाने पर उपलब्ध ऊर्जा में उत्तरोत्तर कमी आती है। यह ऊष्मागतिकी के दूसरे नियम और पारिस्थितिक प्रक्रियाओं के दौरान ऊष्मा के रूप में ऊर्जा के अत्यधिक नुकसान से संबंधित है।

हालांकि, विशेष पारिस्थितिक तंत्रों में बायोमास और संख्या के पिरामिड उल्टे हो सकते हैं।

उदाहरण के लिए, कुछ जलीय पारिस्थितिक तंत्रों में, फाइटोप्लांकटन (पादप प्लवक) का खड़ा बायोमास उपभोक्ताओं के बायोमास से कम हो सकता है क्योंकि फाइटोप्लांकटन तेजी से प्रजनन करते हैं और तेजी से उपभोग किए जाते हैं। इसलिए, कथन (c) अत्यधिक निरपेक्ष (अत्यंत कठोर) होगा।

इसी तरह, पारिस्थितिक पिरामिड केवल स्थलीय पारिस्थितिक तंत्र तक सीमित नहीं हैं। जलीय पारिस्थितिक तंत्रों में भी पोषण संरचनाएं होती हैं जिन्हें ऐसे पिरामिडों के माध्यम से दर्शाया जा सकता है।

इसलिए यूपीएससी-स्तरीय वैचारिक अंतर निम्नलिखित हैं:

- ऊर्जा का पिरामिड → हमेशा सीधा
- बायोमास का पिरामिड → सीधा या उल्टा हो सकता है
- संख्या का पिरामिड → सीधा या उल्टा हो सकता है

अतः, पारिस्थितिक पिरामिड पोषण संरचना को समझने के लिए निरूपण उपकरण हैं, न कि सार्वभौमिक कथन कि प्रत्येक पारिस्थितिकी तंत्र को समान संख्यात्मक या बायोमास संबंध प्रदर्शित करना ही चाहिए।

Q.3. आर्थिक संवृद्धि और मानव विकास के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यदि स्वास्थ्य, शिक्षा और अन्य आवश्यक सेवाओं तक पहुंच असमान रहती है, तो मानव विकास में आनुपातिक सुधार के बिना भी वास्तविक प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हो सकती है।
2. जीडीपी वृद्धि की उच्च दर अनिवार्य रूप से उत्पादक रोजगार में तदनुरूपी वृद्धि का संकेत देती है क्योंकि उत्पादन वृद्धि स्वतः ही उसी अनुपात में श्रम की मांग को बढ़ाती है।
3. आर्थिक विकास आर्थिक संवृद्धि की तुलना में व्यापक है क्योंकि इसमें जीवन स्तर, क्षमताओं और किसी अर्थव्यवस्था की संरचनात्मक विशेषताओं में गुणात्मक परिवर्तन शामिल होते हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (b) केवल दो

विस्तृत व्याख्या:

- कथन 1 सही है।

प्रति व्यक्ति आय एक औसत सूचक है। यह यह प्रकट नहीं करता है कि आय का वितरण कैसे किया जाता है या नागरिकों की शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, स्वच्छता, पोषण और अन्य सार्वजनिक वस्तुओं तक समान पहुंच है या नहीं। इसलिए, आय की वृद्धि महत्वपूर्ण मानव-विकास घाटियों के साथ सह-अस्तित्व में रह सकती है।

- **कथन 2 गलत है।**

जीडीपी वृद्धि स्वतः ही उसी अनुपात में रोजगार उत्पन्न नहीं करती है। वृद्धि अत्यधिक पूंजी-गहन क्षेत्रों, तकनीकी रूप से उन्नत गतिविधियों या विशेष कौशल की आवश्यकता वाले क्षेत्रों में केंद्रित हो सकती है। इसके परिणामस्वरूप वह स्थिति उत्पन्न हो सकती है जिसे कभी-कभी रोजगार-हीन (jobless) या कम-रोजगार वाली संवृद्धि (employment-light growth) के रूप में वर्णित किया जाता है।

- **कथन 3 सही है।**

आर्थिक संवृद्धि (Economic growth) सामान्यतः वास्तविक उत्पादन या आय में वृद्धि को संदर्भित करती है, जबकि आर्थिक विकास (Economic development) मानव कल्याण, क्षमताओं, उत्पादकता, संस्थानों और संरचनात्मक परिवर्तन में व्यापक सुधारों को शामिल करता है।

यह अंतर भारत के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि एक बड़ी कार्यशील आयु वाली आबादी को केवल उच्च जीडीपी की ही नहीं, बल्कि पर्याप्त उत्पादक और लाभकारी रोजगार की भी आवश्यकता होती है।

एक उपयोगी वैचारिक ढांचा है:

- आर्थिक संवृद्धि → मात्रात्मक विस्तार
- आर्थिक विकास → संवृद्धि + संरचनात्मक परिवर्तन + मानव कल्याण + क्षमताएं

एक और महत्वपूर्ण अंतर साधन के रूप में आय और साध्य के रूप में विकास के बीच है। उच्च आय लोगों की क्षमताओं का विस्तार कर सकती है, लेकिन केवल तब जब इसके साथ आवश्यक सामाजिक और आर्थिक अवसरों तक पहुंच भी उपलब्ध हो।

इसलिए, जीडीपी आर्थिक प्रदर्शन का एक महत्वपूर्ण सूचक बनी हुई है, लेकिन यह स्वयं में विकास का एक पूर्ण माप नहीं हो सकती है।

Q.4. भारतीय राजनीति में हाल के घटनाक्रमों के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. क्षेत्रीय दलों के उद्भव ने राष्ट्रीय चुनावी और संसदीय राजनीति के भीतर क्षेत्र-विशिष्ट आकांक्षाओं की अधिक राजनीतिक अभिव्यक्ति में योगदान दिया है।
2. गठबंधन की राजनीति अनिवार्य रूप से संघवाद को कमजोर करती है क्योंकि राष्ट्रीय सरकारों में भाग लेने वाले क्षेत्रीय दल हमेशा राष्ट्रीय नीतिगत उद्देश्यों की तुलना में संकीर्ण क्षेत्रीय हितों को प्राथमिकता देते हैं।
3. दल-बदल विरोधी ढांचे को आंशिक रूप से किसी पार्टी के टिकट पर चुने जाने के बाद विधायकों द्वारा राजनीतिक निष्ठा बदलने से जुड़ी अस्थिरता से निपटने के लिए पेश किया गया था।

4. क्षेत्रीय राजनीतिक ताकतों के विकास का अर्थ यह है कि राष्ट्रीय राजनीतिक दल क्षेत्रीय दलों के समर्थन के बिना सरकार बनाने में संवैधानिक रूप से असमर्थ हो गए हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) केवल तीन
- (d) सभी चार

उत्तर: (c) केवल तीन

(संपादकीय सुधार नोट: मूल उत्तर कुंजी में उत्तर (c) यानी 'केवल तीन' दिया गया है। प्रामाणिक कानूनी/संवैधानिक विश्लेषण के अनुसार: कथन 1 और 3 सही हैं, जबकि कथन 2 और 4 गलत हैं (अर्थात केवल 2 कथन सही हैं)। आधिकारिक व्याख्या नीचे दी गई है:)

विस्तृत व्याख्या:

- **कथन 1 सही है।**

क्षेत्रीय दलों ने राज्य-विशिष्ट चिंताओं, भाषाई पहचानों, क्षेत्रीय विकास की मांगों और अधिक स्वायत्तता की मांगों को राष्ट्रीय राजनीति में लाने में प्रमुख भूमिका निभाई है। परिणामस्वरूप उनके उद्भव ने भारतीय लोकतंत्र के संघीय आयाम को गहरा किया है।

- **कथन 2 गलत है।**

गठबंधन की राजनीति अनिवार्य रूप से संघवाद को कमजोर नहीं करती है। यह वास्तव में राष्ट्रीय निर्णय लेने में क्षेत्रीय दलों को अधिक प्रतिनिधित्व देकर संघीय समायोजन को मजबूत कर सकती है। गठबंधन की राजनीति शासन को मजबूत करती है या कमजोर करती है, यह राजनीतिक सौदेबाजी की प्रकृति और संस्थागत कामकाज पर निर्भर करता है।

- **कथन 3 सही है।**

52वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1985 ने राजनीतिक दल-बदल को रोकने और विधायिकाओं में स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए दसवीं अनुसूची को पेश किया। इसके बाद 91वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2003 के माध्यम से कानून में महत्वपूर्ण संशोधन किए गए।

- **कथन 4 गलत है।**

"संवैधानिक रूप से असमर्थ" शब्द इस कथन को मौलिक रूप से गलत बनाता है। ऐसा कोई संवैधानिक प्रावधान या बाध्यता नहीं है कि किसी राष्ट्रीय राजनीतिक दल को केंद्र सरकार बनाने के लिए क्षेत्रीय दलों का समर्थन प्राप्त करना ही पड़े। कोई दल या गठबंधन लोकसभा में आवश्यक बहुमत हासिल करके सरकार बना सकता है।

भारतीय राजनीति का व्यापक परिवर्तन एक-दल के प्रभुत्व से अधिक राजनीतिक बहुलवाद की ओर हुआ है। क्षेत्रीय दल इस परिवर्तन के महत्वपूर्ण एजेंट रहे हैं, लेकिन उनका प्रभाव अलग-अलग चुनावों और कालखंडों में भिन्न-भिन्न रहा है।

महत्वपूर्ण यूपीएससी अंतर निम्नलिखित के बीच हैं:

- राजनीतिक आवश्यकता → चुनावी गणित से उत्पन्न हो सकती है और
- संवैधानिक आवश्यकता → संवैधानिक प्रावधानों से उत्पन्न होती है।

गठबंधन सरकारों में क्षेत्रीय-दल की भागीदारी विशेष परिस्थितियों में राजनीतिक रूप से आवश्यक हो सकती है, लेकिन यह संवैधानिक रूप से अनिवार्य नहीं है।

Q.5. निम्नलिखित पर विचार कीजिए:

कथन (A): ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी केंद्रों की ओर प्रवास अनिवार्य रूप से गंतव्य क्षेत्र की शहरी जनसंख्या में आनुपातिक वृद्धि का कारण नहीं बनता है।

कारण I: शहरी जनसंख्या परिवर्तन न केवल ग्रामीण-शहरी प्रवास से प्रभावित होता है, बल्कि प्राकृतिक वृद्धि, वापसी प्रवास, अंतर्राष्ट्रीय प्रवास और बस्तियों के प्रशासनिक वर्गीकरण में बदलाव से भी प्रभावित होता है।

कारण II: कोई बस्ती उसमें प्रवेश करने वाले प्रवासियों की संख्या में तदनुरूपी वृद्धि के बिना भी पुनर्वर्गीकरण या प्रशासनिक विस्तार के माध्यम से शहरी स्वरूप प्राप्त कर सकती है।

निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

- (a) कथन (A) और कारण I दोनों सही हैं, और कारण I, कथन (A) की सही व्याख्या करता है; कारण II गलत है।
- (b) कथन (A) और कारण II दोनों सही हैं, लेकिन कारण I गलत है।
- (c) कथन (A) सही है, और कारण I और कारण II दोनों सही हैं, तथा दोनों कथन (A) की सही व्याख्या करते हैं।
- (d) कथन (A) गलत है, लेकिन कारण I और कारण II दोनों सही हैं।

उत्तर: (c)

विस्तृत व्याख्या:

कथन (A) सही है क्योंकि शहरी जनसंख्या परिवर्तन को विशेष रूप से केवल ग्रामीण-से-शहरी प्रवास का परिणाम नहीं माना जा सकता है।

एक शहरी जनसंख्या का आकार कई जनसांख्यिकीय और प्रशासनिक प्रक्रियाओं के माध्यम से बदल सकता है।

- कारण I — सही है

शहरी जनसंख्या की गतिशीलता निम्नलिखित से प्रभावित होती है:

- प्राकृतिक वृद्धि — जन्म माइनस मृत्यु;
- ग्रामीण-से-शहरी प्रवास;
- अन्य शहरी केंद्रों से प्रवास;
- वापसी प्रवास (Return migration);
- अंतर्राष्ट्रीय प्रवास;
- प्रशासनिक पुनर्वर्गीकरण या शहरी सीमाओं का विस्तार।

इसलिए, किसी शहर में महत्वपूर्ण प्रवास भी अपने आप में पूरे शहरी जनसंख्या वृद्धि के परिमाण को निर्धारित नहीं करता है।

• कारण II — सही है

प्रशासनिक परिवर्तन शहरी आबादी के सांख्यिकीय आकार को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकते हैं। किसी बस्ती को तब शहरी के रूप में पुनर्वर्गीकृत किया जा सकता है जब वह निर्दिष्ट जनसांख्यिकीय, व्यावसायिक या प्रशासनिक मानदंडों को पूरा करती है। इसी तरह, नगर पालिका की सीमाओं के विस्तार से पहले के ग्रामीण क्षेत्रों को एक शहरी प्रशासनिक इकाई के तहत लाया जा सकता है।

परिणामस्वरूप, शहरी आबादी में दर्ज की गई वृद्धि न केवल वास्तविक जनसांख्यिकीय आवाजाही को दर्शा सकती है, बल्कि शहरी क्षेत्रों की स्थानिक और प्रशासनिक परिभाषा में बदलाव को भी दर्शा सकती है।

यह प्रश्न एक महत्वपूर्ण भौगोलिक अंतर को उजागर करता है:

- शहरीकरण ≠ केवल ग्रामीण-से-शहरी प्रवास।
- शहरीकरण एक व्यापक प्रक्रिया है जिसमें जनसांख्यिकीय, व्यावसायिक, स्थानिक और प्रशासनिक परिवर्तन शामिल हैं।

यह तेजी से शहरीकृत हो रहे विकासशील देशों के लिए विशेष रूप से प्रासंगिक है, जहां परिधीय बस्तियां धीरे-धीरे शहरी विशेषताओं को प्राप्त कर सकती हैं और विस्तारित होते महानगरीय क्षेत्रों में शामिल हो सकती हैं।

इस प्रकार, दोनों कारण सही ढंग से व्याख्या करते हैं कि प्रवास और शहरी जनसंख्या वृद्धि के बीच का संबंध यांत्रिक रूप से आनुपातिक क्यों नहीं है।

दैनिक अभ्यास प्रश्न – करंट अफेयर्स अनुभाग से

Q.1. 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. क्रिप्स मिशन की विफलता के बाद बंबई में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा भारत छोड़ो प्रस्ताव अपनाया गया था, और गांधी जी ने बाद में "करो या मरो" का आह्वान किया था।
2. प्रस्ताव के तुरंत बाद प्रमुख कांग्रेस नेतृत्व की गिरफ्तारी ने आंदोलन को किसी भी महत्वपूर्ण भूमिगत या विकेंद्रीकृत प्रतिरोध के रूपों में विकसित होने से रोक दिया।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं? (a) केवल एक (b) दोनों कथन (c) न तो एक और न ही दो (d) केवल कथन 1

उत्तर: (d) केवल कथन 1

विस्तृत व्याख्या:

- **कथन 1 सही है।** 8 अगस्त 1942 को बंबई के गवालिया टैंक मैदान में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक में भारत छोड़ो प्रस्ताव अपनाया गया था। गांधी जी ने ऐतिहासिक "करो या मरो" का आह्वान किया। क्रिप्स मिशन की विफलता और युद्ध के समय बिगड़ती स्थिति कांग्रेस द्वारा आंदोलन शुरू करने के निर्णय के पीछे महत्वपूर्ण कारक थे।
- **कथन 2 गलत है।** यह जानबूझकर बनाया गया जाल है। अंग्रेजों ने प्रमुख कांग्रेस नेतृत्व को लगभग तुरंत गिरफ्तार कर लिया, लेकिन इसने विकेंद्रीकृत प्रतिरोध को नहीं रोका। इसके विपरीत, केंद्रीय नेतृत्व की अनुपस्थिति ने भूमिगत नेटवर्क और स्थानीय स्तर पर संगठित प्रतिरोध के उद्भव में योगदान दिया। अरुणा आसफ अली, उषा मेहता, राम मनोहर लोहिया और जयप्रकाश नारायण जैसे नेता और कार्यकर्ता भूमिगत गतिविधियों से जुड़े, जबकि बलिया, सतारा और तामलुक जैसे स्थानों में समानांतर सरकारें उभरीं।

इसलिए भारत छोड़ो आंदोलन की विशिष्ट विशेषता शुरुआती गिरफ्तारियों के बाद इसका नेताविहीन और विकेंद्रीकृत स्वरूप था। यह इसे कांग्रेस के पिछले आंदोलनों से अलग करता है जिनमें गांधी जी और अन्य राष्ट्रीय नेता जन लामबंदी को निर्देशित करने में अधिक प्रत्यक्ष रूप से शामिल थे।

Q.2. नेशनल अर्बन कोऑपरेटिव फाइनेंस एंड डेवलपमेंट कॉरपोरेशन लिमिटेड (NUCFDC) के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा इसकी संस्थागत भूमिका का सबसे उपयुक्त विवरण है?

(a) यह संघ (केंद्र) और शहरी स्थानीय निकायों के बीच वित्तीय संसाधनों के वितरण को निर्धारित करने के लिए जिम्मेदार एक संवैधानिक वित्तीय आयोग है।

(b) यह शहरी सहकारी बैंकों के लिए एक छत्र संगठन (umbrella organisation) है जिसका उद्देश्य फंड-आधारित और गैर-फंड-आधारित सहायता प्रदान करना तथा उनकी तकनीकी, परिचालन और वित्तीय क्षमताओं को मजबूत करना है।

(c) यह एक वैधानिक नियामक है जिसने शहरी सहकारी बैंकों के प्राथमिक नियामक के रूप में भारतीय रिजर्व बैंक का स्थान लिया है।

(d) यह एक सरकारी स्वामित्व वाला वाणिज्यिक बैंक है जो विशेष रूप से नगरपालिकाओं को दीर्घकालिक बुनियादी ढांचा ऋण प्रदान करने के लिए स्थापित किया गया है। **उत्तर: (b)**

विस्तृत व्याख्या: NUCFDC को शहरी सहकारी बैंकों (UCBs) के लिए एक छत्र संगठन (umbrella organisation) के रूप में स्थापित किया गया है। इसका उद्देश्य UCBs द्वारा सामना की जाने वाली संरचनात्मक कठिनाइयों को दूर करना है, जिनमें तकनीकी सीमाएं, परिचालन अक्षमताएं, वित्तीय चुनौतियां और शासन संबंधी चिंताएं शामिल हैं।

इस संगठन की परिकल्पना दोनों प्रकार की सहायता प्रदान करने के लिए की गई है:

- **फंड-आधारित सहायता**, लागू नियमों के अधीन पूंजी सहायता सहित; और
- **गैर-फंड-आधारित सेवाएं**, तकनीकी, परिचालन और क्षमता-निर्माण सहायता सहित।

भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने 8 फरवरी 2024 को NUCFDC को एक गैर-बैंकिंग वित्तीय संस्थान (NBFI) के रूप में काम करने के लिए पंजीकरण प्रमाणपत्र (Certificate of Registration) प्रदान किया था। इसका एक उद्देश्य डिजिटलीकरण को गति देना और UCBs की सामूहिक ताकत का लाभ उठाना है।

महत्वपूर्ण यूपीएससी जाल एक छत्र संगठन को एक नियामक के साथ भ्रमित करना है। NUCFDC, UCBs पर RBI की नियामक भूमिका को प्रतिस्थापित नहीं करता है।

इसका व्यापक महत्व अत्यधिक खंडित शहरी सहकारी-बैंकिंग क्षेत्र के भीतर अधिक पैमाने, तकनीकी क्षमता, वित्तीय लचीलेपन और प्रतिस्पर्धात्मकता का निर्माण करने में निहित है।

Q.3. मक्का संयुक्त रक्षा समझौते के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. इस समझौते पर सऊदी अरब, तुर्की और पाकिस्तान द्वारा अगस्त 2026 में हस्ताक्षर किए गए थे और यह प्रावधान करता है कि तीन प्रतिभागी राज्यों में से किसी एक के खिलाफ सशस्त्र हमला सभी के खिलाफ हमला माना जाएगा।
2. यह समझौता नाटो (NATO) के तुलनीय एक पूरी तरह से एकीकृत सैन्य कमान संरचना स्थापित करता है और जब भी किसी अन्य सदस्य पर हमला होता है तो प्रत्येक सदस्य के लिए युद्ध बलों को तैनात करने की एक स्वचालित बाध्यता उत्पन्न करता है।
3. इस समझौते को भाग लेने वाले देशों द्वारा आधिकारिक तौर पर रक्षात्मक प्रकृति का बताया गया है और इसका उद्देश्य बाहरी आक्रामकता के खिलाफ सामूहिक निवारण (collective deterrence) को मजबूत करना है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं? (a) केवल एक (b) केवल दो (c) सभी तीन (d) कोई नहीं **उत्तर: (b) केवल दो**

विस्तृत व्याख्या:

- **कथन 1 सही है।** सऊदी अरब, तुर्की और पाकिस्तान ने 7 अगस्त 2026 को मक्का में मक्का संयुक्त रक्षा समझौते पर हस्ताक्षर किए। समझौते में कहा गया है कि तीनों में से किसी भी एक देश के खिलाफ सशस्त्र हमला तीनों के खिलाफ हमला माना जाएगा।

- **कथन 2 गलत है।** इस समझौते को यांत्रिक रूप से नाटो के बराबर नहीं माना जाना चाहिए। संधि पर रिपोर्टिंग से पता चलता है कि इसमें नाटो की एकीकृत सैन्य कमान और तुलनीय संस्थागत संरचना का अभाव है। अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि समझौते का अर्थ आवश्यक रूप से हर संभावित आकस्मिकता में युद्ध बलों की स्वचालित, पूर्व-निर्धारित तैनाती नहीं है।
- **कथन 3 सही है।** पाकिस्तान का आधिकारिक बयान विशेष रूप से इस समझौते को प्रकृति में रक्षात्मक के रूप में वर्णित करता है, जिसका उद्देश्य बाहरी आक्रामकता के खिलाफ सामूहिक निवारण को मजबूत करना और संप्रभुता तथा क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा करने की प्रतिभागियों की क्षमता को सुदृढ़ करना है।

समझौते का विश्लेषणात्मक महत्व क्षेत्रीय सुरक्षा व्यवस्था और रणनीतिक स्वायत्तता की ओर उभरते रुझान में निहित है। यह यह भी दर्शाता है कि क्यों एक औपचारिक पारस्परिक-रक्षा खंड स्वचालित रूप से किसी व्यवस्था को संस्थागत रूप से नाटो के समकक्ष नहीं बनाता है।

Q.4. स्लेंडर-बिल गिद्ध (पतली चोंच वाले गिद्ध) और व्हाइट-रम्पड गिद्ध (सफेद पीठ वाले गिद्ध) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. दोनों प्रजातियां महत्वपूर्ण सफाईकर्मी (scavengers) हैं जिनकी पारिस्थितिक भूमिका में पशुओं के शवों को तेजी से हटाना शामिल है, जिससे पारिस्थितिकी तंत्र की स्वच्छता में योगदान मिलता है।
2. दक्षिण एशिया में इन गिद्धों की विनाशकारी गिरावट पशुधनों में डाइक्लोफेनाक (diclofenac) के पशु चिकित्सा उपयोग से दृढ़ता से जुड़ी हुई थी।
3. इन प्रजातियों का संरक्षण मुख्य रूप से घोंसले वाले पेड़ों की रक्षा करके हासिल किया जा सकता है, क्योंकि उनकी जनसंख्या में गिरावट पशुओं के शवों में जहरीले अवशेषों की उपस्थिति से असंबद्ध थी।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं? (a) केवल एक (b) केवल दो (c) सभी तीन (d) कोई नहीं **उत्तर: (b) केवल दो**

विस्तृत व्याख्या:

- **कथन 1 सही है।** गिद्ध अत्यधिक कुशल सफाईकर्मी हैं। पशुओं के शवों का तेजी से उपभोग करके, वे एक महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र-सेवा कार्य करते हैं और संभावित रूप से बीमारी फैलाने वाले शव पदार्थों की निरंतरता को कम कर सकते हैं। सफेद पीठ वाले और पतली चोंच वाले गिद्ध भारत की गंभीर रूप से संकटग्रस्त गिद्ध प्रजातियों में से हैं।
- **कथन 2 सही है।** पशुधनों में पशु चिकित्सा दवा डाइक्लोफेनाक का उपयोग दक्षिण एशियाई जिप्स (Gyps) गिद्धों की कई प्रजातियों की विनाशकारी गिरावट में एक प्रमुख कारक था। डाइक्लोफेनाक से उपचारित पशुओं के शवों को खाने वाले गिद्धों की गुर्दे की विफलता (kidney failure) से मृत्यु हो सकती थी।
- **कथन 3 गलत है।** घोंसले की सुरक्षा महत्वपूर्ण है लेकिन यह अपने आप में गिरावट के मुख्य ऐतिहासिक कारण को दूर नहीं कर सकती है। संरक्षण के लिए हानिकारक पशु चिकित्सा फार्मास्यूटिकल्स के संपर्क को समाप्त करने, सुरक्षित भोजन स्रोतों को सुनिश्चित करने और प्रजनन व भोजन की तलाश वाले आवासों की रक्षा करने की आवश्यकता होती है।

यह एक महत्वपूर्ण पारिस्थितिक-श्रृंखला संबंध है: पशु चिकित्सा दवा का उपयोग → पशुओं के शवों में दवा के अवशेष → गिद्धों द्वारा उपभोग → विषाक्तता → बड़े पैमाने पर मृत्यु दर → जनसंख्या में तेज गिरावट

संरक्षण का सबक यह है कि वन्यजीवों की गिरावट कभी-कभी प्रजातियों के तत्काल आवास के बाहर मानवीय गतिविधियों से उत्पन्न हो सकती है। परिणामस्वरूप, प्रजातियों के संरक्षण के लिए केवल घोंसले के स्थानों की रक्षा करने के बजाय पारिस्थितिकी तंत्र-व्यापी और अंतर-क्षेत्रीय दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।

Q.5. अग्नि-IV बैलिस्टिक मिसाइल के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. अग्नि-IV भारत द्वारा स्वदेशी रूप से विकसित सतह-से-सतह पर मार करने वाली बैलिस्टिक मिसाइल है और यह देश की रणनीतिक मिसाइल क्षमता का हिस्सा है।
2. इसकी सीमा (रेंज) इसे व्यापक रूप से मध्यवर्ती दूरी की बैलिस्टिक मिसाइल (IRBM) श्रेणी में रखती है।
3. इसका ठोस-प्रणोदक (solid-propellant) विन्यास तरल-प्रणोदक तैयारी की आवश्यकता वाली मिसाइलों की तुलना में अपेक्षाकृत त्वरित परिचालन तत्परता की अनुमति देता है।
4. बैलिस्टिक मिसाइल होने के नाते, अग्नि-IV प्रक्षेपण के बाद अनिवार्य रूप से पूरी तरह से अनिर्देशित (unguided) प्रक्षेपवक्र का पालन करती है और इसलिए इसमें परिष्कृत मार्गदर्शन प्रणालियों को शामिल नहीं किया जा सकता है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं? (a) केवल एक (b) केवल दो (c) केवल तीन (d) सभी चार **उत्तर: (c) केवल तीन**

विस्तृत व्याख्या:

- **कथन 1 सही है।** अग्नि-IV स्वदेशी रूप से विकसित सतह-से-सतह पर मार करने वाली बैलिस्टिक मिसाइल है और भारत की रणनीतिक मिसाइल क्षमताओं का हिस्सा है।
- **कथन 2 सही है।** अग्नि-IV की मारक क्षमता लगभग 4,000 किमी है, जो इसे आमतौर पर इस्तेमाल किए जाने वाले रेंज वर्गीकरण के अनुसार व्यापक मध्यवर्ती-दूरी की बैलिस्टिक मिसाइल (IRBM) श्रेणी में रखती है।
- **कथन 3 सही है।** अग्नि-IV ठोस प्रणोदक का उपयोग करती है। ठोस-प्रणोदक मिसाइलें आमतौर पर भंडारण, रखरखाव और तत्परता में लाभ प्रदान करती हैं क्योंकि उन्हें कई तरल-प्रणोदक प्रणालियों से जुड़ी व्यापक पूर्व-प्रक्षेपण ईंधन भरने की प्रक्रियाओं की आवश्यकता नहीं होती है।
- **कथन 4 गलत है।** यह मुख्य जाल है। बैलिस्टिक का मतलब अनिर्देशित (unguided) होना नहीं है। एक बैलिस्टिक मिसाइल परिष्कृत मार्गदर्शन और नेविगेशन प्रणालियों को शामिल कर सकती है। अग्नि-IV उन्नत मार्गदर्शन और नेविगेशन क्षमताओं से जुड़ी है जो सटीकता में सुधार करती हैं।

वैचारिक अंतर है: बैलिस्टिक प्रक्षेपवक्र $\neq$ मार्गदर्शन की अनुपस्थिति। एक बैलिस्टिक मिसाइल ऐसे प्रक्षेपवक्र का पालन करती है जो अपने संचालित चरण (powered phase) के बाद मुख्य रूप से प्रक्षेप्य गति (projectile motion) के सिद्धांतों द्वारा नियंत्रित होता है, लेकिन आधुनिक बैलिस्टिक मिसाइलें अपनी उड़ान को नियंत्रित और संशोधित करने के लिए परिष्कृत प्रणालियों का उपयोग कर सकती हैं।

इस प्रकार, अग्नि-IV न केवल सीमा में वृद्धि का प्रतिनिधित्व करती है बल्कि ठोस-प्रणोदक तकनीक, मार्गदर्शन, नेविगेशन और रणनीतिक मिसाइल क्षमता में भारत की प्रगति का भी प्रतिनिधित्व करती है।

Q.6. यूराल पर्वत के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. इन्हें पारंपरिक रूप से यूरोप को एशिया से अलग करने वाली प्रमुख भौतिक भौगोलिक सीमाओं में से एक माना जाता है।
2. इनका उत्तरी विस्तार आर्कटिक क्षेत्र की ओर पहुंचता है, जबकि इनका दक्षिणी विस्तार कजाकिस्तान-कैस्पियन क्षेत्र के करीब पहुंचता है।
3. संपूर्ण यूराल पर्वत प्रणाली वोल्गा नदी के पूर्व में स्थित है और इसलिए इसका यूरोपीय रूस के साथ कोई भौगोलिक संबंध नहीं है।
4. यूराल पर्वत भूवैज्ञानिक रूप से हिमालय से पुराने हैं और एक प्राचीन पर्वत प्रणाली का प्रतिनिधित्व करते हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं? (a) केवल एक (b) केवल दो (c) केवल तीन (d) सभी चार **उत्तर: (c) केवल तीन**

विस्तृत व्याख्या:

- **कथन 1 सही है।** यूराल पर्वत का पारंपरिक रूप से यूरोप और एशिया के बीच प्रमुख भौगोलिक सीमाओं में से एक के रूप में उपयोग किया जाता है।
- **कथन 2 सही है।** यूराल एक लंबी उत्तर-दक्षिण पर्वत प्रणाली बनाते हैं जो उत्तर में आर्कटिक क्षेत्र से दक्षिण की ओर फैली हुई है, जिसमें दक्षिणी यूराल प्रणाली कजाकिस्तान और व्यापक कैस्पियन क्षेत्र की ओर फैली हुई है।
- **कथन 3 गलत है।** यह जानबूझकर घुमाया गया कथन है। यूराल को पूरी तरह से यूरोपीय रूस से अलग एक साधारण भौगोलिक विशेषता के रूप में नहीं माना जा सकता है। इनका पश्चिमी भाग यूरोपीय रूसी परिदृश्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनाता है, और यह पर्वत श्रृंखला स्वयं एक पूर्ण वोल्गा-पूर्व बाधा के बजाय एक संक्रमण क्षेत्र (transition zone) का गठन करती है।
- **कथन 4 सही है।** यूराल एक प्राचीन पर्वत प्रणाली हैं, जो भारतीय और यूरेशियाई प्लेटों के निरंतर अभिसरण (convergence) के माध्यम से बनी अपेक्षाकृत युवा हिमालयी पर्वत प्रणाली की तुलना में काफी पुरानी हैं।

मानचित्र-आधारित यूपीएससी सीख: एक उपयोगी स्थानिक क्रम है: आर्कटिक क्षेत्र → उत्तरी यूराल → मध्य यूराल → दक्षिणी यूराल → कजाकिस्तान/कैस्पियन क्षेत्र

यूराल पर्वत इसलिए महत्वपूर्ण नहीं हैं क्योंकि वे दुनिया की सबसे ऊंची श्रृंखलाओं में से हैं—वे अपेक्षाकृत पुराने और अपरदित हैं—बल्कि अपनी भौगोलिक स्थिति, भूवैज्ञानिक इतिहास और खनिज संपदा के कारण महत्वपूर्ण हैं।

दैनिक अभ्यास हेतु विषय आधारित प्रश्न

GS पेपर I (GS Paper I)

प्र.1 "औद्योगिक क्रांति ने उत्पादन की प्रकृति को बदल दिया, लेकिन इसके सबसे स्थायी परिणाम सामाजिक और राजनीतिक थे।" चर्चा कीजिए।

NCERT संदर्भ: विश्व इतिहास के कुछ विषय (Themes in World History), कक्षा XI — औद्योगिक क्रांति और उससे संबंधित विषय।

मॉडल उत्तर (Model Answer)

अठारहवीं शताब्दी के अंत में ब्रिटेन में शुरू हुई और बाद में महाद्वीपीय यूरोप तथा अन्य क्षेत्रों में फैली औद्योगिक क्रांति, एक तकनीकी परिवर्तन से कहीं अधिक थी। यद्यपि भाप के इंजन, कताई मशीनों और बेहतर लोहा प्रौद्योगिकी जैसे आविष्कारों ने उत्पादन क्षमता में वृद्धि की, लेकिन औद्योगीकरण के अधिक गहरे परिणाम सामाजिक संबंधों, शहरी जीवन, वर्ग संरचनाओं, राजनीतिक विचारधाराओं और वैश्विक शक्ति संबंधों के परिवर्तन में निहित थे।

आर्थिक रूप से, औद्योगीकरण ने उत्पादन को बिखरे हुए घरेलू और कारीगरी प्रणालियों से हटाकर कारखाना प्रणाली (Factory System) की ओर स्थानांतरित कर दिया। मशीनीकरण ने बड़े पैमाने पर उत्पादन (Mass Production), मानकीकरण और उच्च उत्पादकता को सक्षम बनाया। एक ही छत के नीचे पूंजी, मशीनरी और श्रमिकों के संकेंद्रण ने श्रम और स्वामित्व के बीच के संबंध को भी बदल दिया। श्रमिक तेजी से मजदूरी पर निर्भर होते गए, जबकि उद्यमियों और औद्योगिक पूंजीपतियों ने उत्पादन पर अधिक नियंत्रण प्राप्त कर लिया।

ने एक नई औद्योगिक वर्ग संरचना को जन्म दिया। औद्योगिक बुर्जुआ वर्ग (Industrial Bourgeoisie) ने विनिर्माण, व्यापार और वित्त के माध्यम से पूंजी का संचय किया, जबकि तेजी से विस्तार करते शहरों में एक बड़ा मजदूर वर्ग (Working Class) उभर कर सामने आया। इन वर्गों के बीच के संबंधों की विशेषता अक्सर असमान सौदेबाजी की शक्ति, काम के लंबे घंटे, कम मजदूरी और असुरक्षित कार्य स्थितियों से थी।

शहरीकरण (Urbanisation) इसका एक और प्रमुख परिणाम था। औद्योगिक केंद्रों ने बड़ी संख्या में ग्रामीण प्रवासियों को आकर्षित किया। शहर तेजी से फैले, लेकिन बुनियादी ढांचा अक्सर इसकी गति के साथ तालमेल बिठाने में विफल रहा। अत्यधिक भीड़भाड़, अपर्याप्त स्वच्छता, प्रदूषण और बीमारियां कई शुरुआती औद्योगिक शहरों की विशिष्ट विशेषताएं बन गईं।

इन सामाजिक परिणामों ने नई राजनीतिक चेतना को जन्म दिया। श्रमिकों ने ट्रेड यूनियनों, हड़तालों और राजनीतिक आंदोलनों के माध्यम से खुद को संगठित करना शुरू किया। बौद्धिक प्रतिक्रियाओं में उदारवाद, समाजवाद और अंततः पूंजीवाद की मार्क्सवादी आलोचना शामिल थी। मार्क्स और एंगेल्स ने औद्योगिक समाज की व्याख्या बुर्जुआ और सर्वहारा (Proletariat) के बीच वर्ग संघर्ष के ढांचे के माध्यम से की।

औद्योगीकरण ने साम्राज्यवाद (Imperialism) के विस्तार में भी योगदान दिया। यूरोपीय औद्योगिक अर्थशास्त्रों को कच्चे माल, बाजारों और निवेश के अवसरों की आवश्यकता थी। औपनिवेशिक क्षेत्रों को तेजी से एक असमान वैश्विक आर्थिक प्रणाली में शामिल किया गया। औद्योगिक और सैन्य प्रौद्योगिकियों ने यूरोपीय राज्यों को मजबूत किया और उनके भू-राजनीतिक प्रभुत्व में योगदान दिया।

हालाँकि, औद्योगीकरण ने महत्वपूर्ण दीर्घकालिक लाभ भी उत्पन्न किए। बढ़ी हुई उत्पादकता ने उच्च आय, बेहतर परिवहन, बड़े पैमाने पर उत्पादन, तकनीकी नवाचार और अंततः बेहतर जीवन स्तर के लिए भौतिक आधार तैयार किया। मजदूर आंदोलनों ने सरकारों को कारखाना कानूनों (Factory Legislation), सार्वजनिक स्वास्थ्य सुधारों और सामाजिक सुरक्षा की ओर भी धकेला।

इस प्रकार, औद्योगिक क्रांति ने एक मौलिक बदलाव उत्पन्न किया:

मशीनीकरण → कारखाना उत्पादन → शहरीकरण → वर्ग निर्माण → राजनीतिक लामबंदी → नई विचारधाराएं → साम्राज्यवादी विस्तार।

इसलिए इसके महत्व को केवल आविष्कृत मशीनों की संख्या से नहीं नापा जा सकता। इसने मौलिक रूप से बदल दिया कि लोग कैसे काम करते थे, वे कहाँ रहते थे, धन का आयोजन कैसे किया जाता था और राजनीतिक शक्ति के लिए संघर्ष कैसे किया जाता था।

समकालीन वैश्विक अर्थव्यवस्था—अपने औद्योगिक शहरों, मजदूरी श्रम, पूंजीवादी बाजारों और प्रौद्योगिकी-संचालित उत्पादन के साथ—औद्योगिक क्रांति द्वारा शुरू किए गए संरचनात्मक परिवर्तनों को दर्शाती रहती है।

GS पेपर II (GS Paper II)

प्र.2 "सुशासन के लिए आवश्यक है कि राज्य जवाबदेही और संवैधानिक मूल्यों से समझौता किए बिना प्रदाता-केंद्रित (Provider-Centric) दृष्टिकोण से नागरिक-केंद्रित (Citizen-Centric) दृष्टिकोण की ओर बढ़े।" इस परिवर्तन को प्राप्त करने के लिए आवश्यक प्रमुख संस्थागत और तकनीकी सुधारों की चर्चा कीजिए।

NCERT संदर्भ: भारत का संविधान: सिद्धांत और व्यवहार, कक्षा XI; स्वतंत्रता के बाद भारत में राजनीति, कक्षा XII — शासन से संबंधित विषय।

मॉडल उत्तर (Model Answer)

शासन में वे प्रक्रियाएं शामिल हैं जिनके माध्यम से सार्वजनिक संस्थान नीतियां बनाते हैं, कार्यक्रमों को लागू करते हैं, सेवाएं प्रदान करते हैं और नागरिकों के प्रति जवाबदेह रहते हैं। पारंपरिक रूप से, भारत में शासन को अक्सर प्रशासनिक संरचनाओं और प्रक्रियाओं के दृष्टिकोण से देखा गया है। हालाँकि, समकालीन शासन को तेजी से एक नागरिक-केंद्रित मॉडल की ओर परिवर्तन की आवश्यकता है, जहाँ सार्वजनिक सेवा की गुणवत्ता को पहुंच, संवेदनशीलता, पारदर्शिता और परिणामों द्वारा मापा जाता है।

नागरिक-केंद्रित शासन नागरिकों को निष्क्रिय लाभार्थियों के बजाय अधिकार-धारक हितधारकों के रूप में स्वीकार करने से शुरू होता है। सूचना का अधिकार (RTI) ढांचा, सामाजिक अंकेक्षण (Social Audits), नागरिक चार्टर (Citizen Charters), शिकायत निवारण तंत्र और सहभागी संस्थानों ने इस परिवर्तन में योगदान दिया है।

प्रौद्योगिकी ने इस परिवर्तन को गति दी है। डिजिटल प्लेटफॉर्म लेनदेन लागत को कम कर सकते हैं, ऑनलाइन सेवा वितरण को सक्षम बना सकते हैं और अंकेक्षण योग्य प्रशासनिक ट्रैक (Auditable Administrative Trails) बना सकते हैं। प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT), डिजिटल भुगतान और एकीकृत सेवा पोर्टल बिचौलियों और रिसाव (Leakages) को कम कर सकते हैं।

हालाँकि, डिजिटल शासन स्वतः सुशासन नहीं बन जाता। प्रौद्योगिकी-संचालित प्रणाली उन नागरिकों को बाहर कर सकती है जिनके पास डिजिटल साक्षरता, कनेक्टिविटी, दस्तावेजीकरण या उपकरणों तक पहुँच का अभाव है। इसलिए, डिजिटल परिवर्तन के साथ सहायक सेवा केंद्र, बहुभाषी इंटरफेस और सुलभ शिकायत निवारण तंत्र होने चाहिए।

संस्थागत सुधार (Institutional Reforms)

- पहला**, लोक प्रशासन में केवल प्रक्रियाओं के बजाय परिणामों (Outcomes) पर अधिक जोर देने की आवश्यकता है। नियमों का अनुपालन आवश्यक बना हुआ है, लेकिन विभागों को यह भी मापना चाहिए कि क्या नीतियां वास्तव में नागरिकों के कल्याण में सुधार करती हैं।
- दूसरा**, शिकायत निवारण अधिक प्रभावी होना चाहिए। नागरिक-केंद्रित प्रणाली को केवल शिकायतें प्राप्त नहीं करनी चाहिए; इसे समयबद्ध समाधान और संस्थागत जवाबदेही प्रदान करनी चाहिए।

3. **तीसरा**, विकेंद्रीकरण को मजबूत करने की जरूरत है। पंचायतें और शहरी स्थानीय निकाय नागरिकों के सबसे करीब हैं और उनके पास पर्याप्त कार्य, वित्त और कर्मचारी (Functions, Finances, and Functionaries) होने चाहिए।
4. **चौथा**, पारदर्शिता को जवाबदेही के साथ पूरक किया जाना चाहिए। सार्वजनिक प्रकटीकरण, सामाजिक अंकेक्षण, संसदीय निरीक्षण, स्वतंत्र लेखापरीक्षा और न्यायिक समीक्षा प्रशासनिक शक्ति पर महत्वपूर्ण नियंत्रण प्रदान करते हैं।

प्रौद्योगिकी और शासन (Technology and Governance)

उभरती प्रौद्योगिकियां निम्नलिखित के माध्यम से शासन में सुधार कर सकती हैं:

- अंतर-संचालनीय डेटाबेस (Interoperable Databases);
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस-सहायता प्राप्त सेवा वितरण;
- डिजिटल पहचान प्रणालियां;
- रियल-टाइम निगरानी (Real-Time Monitoring);
- भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी (Geospatial Technology);
- ऑनलाइन शिकायत ट्रेकिंग।

फिर भी ये प्रौद्योगिकियां गोपनीयता, निगरानी, एल्गोरिथम पूर्वाग्रह (Algorithmic Bias) और डेटा सुरक्षा के संबंध में चिंताएं पैदा करती हैं। इसलिए मजबूत सुरक्षा उपाय आवश्यक हैं।

आगे का रास्ता (Way Forward)

भारत को एक ऐसे शासन ढांचे की ओर बढ़ना चाहिए जो निम्न पर आधारित हो:

पारदर्शिता + पहुंच + भागीदारी + जवाबदेही + प्रौद्योगिकी + संविधानवाद।

नागरिक-केंद्रित शासन के लिए नौकरशाही के भीतर एक सांस्कृतिक परिवर्तन की भी आवश्यकता है। लोक सेवकों को खुद को केवल प्रशासनिक प्रक्रियाओं के संरक्षक के रूप में देखने के बजाय नागरिक अधिकारों और सार्वजनिक कल्याण के सुविधाप्रदाता (Facilitators) के रूप में देखना चाहिए।

अंततः, सुशासन को केवल तेज़ सेवा वितरण तक सीमित नहीं किया जा सकता। गहरा प्रश्न यह है कि क्या सार्वजनिक संस्थान निष्पक्ष, पारदर्शी, समावेशी और गरिमा के साथ सेवाएं प्रदान करते हैं।

इसलिए, प्रौद्योगिकी को शासन को प्रतिस्थापित करने के बजाय उसकी सेवा करनी चाहिए। आदर्श मॉडल वह है जिसमें डिजिटल दक्षता को मानवीय संवेदनशीलता, संस्थागत जवाबदेही और संवैधानिक मूल्यों के साथ जोड़ा जाता है।

GS पेपर III (GS Paper III)

प्र.3 "भारत में आंतरिक सुरक्षा खतरों की विशेषता तेजी से अभिसरण (Convergence) से बन रही है, जिसमें संगठित अपराध, नशीले पदार्थों की तस्करी, आतंकवाद, साइबर नेटवर्क और अवैध वित्त एक-दूसरे को सुदृढ़ करते हैं।" भारत के आंतरिक सुरक्षा ढांचे के लिए इस अभिसरण के निहितार्थों का परीक्षण कीजिए।

NCERT संदर्भ: भारत: लोग और अर्थव्यवस्था, कक्षा XII; समकालीन विश्व में सुरक्षा, कक्षा XII, UPSC आंतरिक सुरक्षा विषयों द्वारा पूरक।

मॉडल उत्तर (Model Answer)

भारत का आंतरिक सुरक्षा वातावरण अपेक्षाकृत अलग-थलग (Compartmentalised) खतरों से विकसित होकर संगठित अपराध के तेजी से आपस में जुड़े रूपों की ओर बढ़ा है। नशीली दवाओं की तस्करी, आतंकवाद, मनी लॉन्ड्रिंग, साइबर अपराध, हथियारों की तस्करी और अंतर्राष्ट्रीय संगठित अपराध एक-दूसरे पर हावी होने वाले नेटवर्क के माध्यम से संचालित हो सकते हैं। यह अभिसरण पारंपरिक एजेंसी-विशिष्ट दृष्टिकोणों को तेजी से अपर्याप्त बनाता है।

नशीले पदार्थों की तस्करी विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह भारी अवैध राजस्व उत्पन्न करती है जो बाद में अन्य आपराधिक गतिविधियों को वित्तपोषित कर सकती है। ड्रग नेटवर्क उन्हीं रास्तों, सुविधा प्रदाताओं, शेल संस्थाओं, संचार प्रणालियों और वित्तीय चैनलों का उपयोग कर सकते हैं जो संगठित अपराध के अन्य रूपों द्वारा नियोजित किए जाते हैं।

इन नेटवर्कों का अंतर्राष्ट्रीय चरित्र अतिरिक्त जटिलता पैदा करता है। आपराधिक तत्व एक देश से काम कर सकते हैं, दूसरे देश के माध्यम से वस्तुओं का स्रोत बना सकते हैं, कई अधिकार क्षेत्रों के माध्यम से धन स्थानांतरित कर सकते हैं और तीसरे देश में नशीली दवाओं का वितरण कर सकते हैं।

सीमा पार/अंतर्राष्ट्रीय आयाम (Transnational Dimension)

भगोड़े नशीले पदार्थों के आरोपी **वीरेंद्र सिंह बैसोया** का मामला अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक नेटवर्क का पीछा करने में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के महत्व को दर्शाता है। भारत के अनुरोध पर जारी इंटरपोल रेड नोटिस के बाद यूएई (UAE) में गिरफ्तार होने के बाद बैसोया को यूएई से भारत वापस लाया गया। वह पुणे के एक बड़े नशीले पदार्थों के मामले में आरोपी है, और जांचकर्ता इस मामले से जुड़े कथित व्यापक नेटवर्क की जांच कर रहे हैं।

यह घटना दर्शाती है कि आंतरिक सुरक्षा का आंतरिक रूप से एक बाहरी परिचालन आयाम होता है। एक आपराधिक नेटवर्क भौतिक रूप से भारत के बाहर स्थित हो सकता है जबकि इसके वित्तीय, तार्किक या सामाजिक परिणाम भारत के भीतर प्रकट होते हैं।

प्रमुख चुनौतियाँ (Major Challenges)

- खंडित खुफिया (Fragmented Intelligence):** विभिन्न एजेंसियों के पास जानकारी के अलग-अलग टुकड़े होते हैं। इसलिए प्रभावी सुरक्षा के लिए खुफिया अभिसरण (Intelligence Fusion) और रियल-टाइम सूचना साझाकरण की आवश्यकता होती है।
- अवैध वित्त (Illicit Finance):** नशीले पदार्थों की तस्करी तब विशेष रूप से खतरनाक हो जाती है जब आपराधिक कमाई वैध व्यवसायों या वित्तीय प्रणालियों में प्रवेश करती है। इसलिए पैसों के लेन-देन का पीछा करना (Follow the Money) उतना ही महत्वपूर्ण हो सकता है जितना कि भौतिक प्रतिबंधित वस्तुओं को पकड़ना।
- प्रौद्योगिकी (Technology):** एन्क्रिप्टेड संचार, डिजिटल मुद्राएं, सोशल मीडिया और ऑनलाइन मार्केटप्लेस आपराधिक नेटवर्कों को सीमाओं के पार समन्वय करने में सक्षम बना सकते हैं।
- छिद्रपूर्ण और कठिन सीमाएँ (Porous and Difficult Borders):** लंबी भूमि और समुद्री सीमाएं नशीली दवाओं, हथियारों और लोगों की तस्करी के अवसर प्रदान करती हैं।

5. **अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्राधिकार (International Jurisdiction):** जांच अक्सर विदेशी सरकारों के साथ सहयोग, प्रत्यर्पण/निर्वासन (Extradition/Deportation) व्यवस्था, पारस्परिक कानूनी सहायता और इंटरपोल तंत्र पर निर्भर करती है।

आगे का रास्ता (Way Forward)

भारत को 'संपूर्ण-सरकार' (Whole-of-Government) और 'संपूर्ण-नेटवर्क' (Whole-of-Network) दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

इसमें निम्नलिखित शामिल होने चाहिए:

- मजबूत खुफिया अभिसरण (Intelligence Fusion);
- वित्तीय जांच;
- बेहतर समुद्री और भूमि-सीमा निगरानी;
- अंतर्राष्ट्रीय पुलिस सहयोग;
- तेज पारस्परिक कानूनी सहायता;
- उन्नत साइबर-फॉरेंसिक;
- समन्वित नशीले पदार्थ प्रवर्तन;
- मजबूत अभियोजन क्षमता;
- मनी लॉन्ड्रिंग के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय सहयोग।

संस्थागत दृष्टिकोण को व्यक्तिगत अपराधियों को गिरफ्तार करने से हटाकर पूरे आपराधिक पारिस्थितिकी तंत्र (Ecosystem) को नष्ट करने की ओर बढ़ना चाहिए।

इसका अर्थ निम्नलिखित की पहचान करना है:

नेतृत्व → लॉजिस्टिक्स → वित्तपोषक → आपूर्तिकर्ता → परिवहनकर्ता → डिजिटल सुविधाप्रदाता → मनी-लॉन्ड्रिंग चैनल → स्थानीय वितरण नेटवर्क।

नशीले पदार्थों के अपराधों को केवल अलग-थलग घरेलू अपराधों के रूप में देखने के बजाय अधिकार क्षेत्रों में आपराधिक नेटवर्कों को ट्रेस करने के महत्व को प्रदर्शित करने में बैसोया का मामला विशेष रूप से प्रासंगिक है।

इस प्रकार, भारत के आंतरिक सुरक्षा ढांचे को तेजी से इस सिद्धांत पर काम करना चाहिए कि आपराधिक नेटवर्क अंतर्राष्ट्रीय होते हैं, भले ही उनके परिणाम स्थानीय हों। इसलिए प्रभावी सुरक्षा के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, खुफिया जानकारी साझा करने और वित्तीय व्यवधान के साथ संयुक्त घरेलू प्रवर्तन क्षमता की आवश्यकता होती है।

GS पेपर IV (GS Paper IV)

प्र.4 "एक लोक सेवक के लिए सबसे कठिन नैतिक निर्णय तब उत्पन्न होते हैं जब प्रतिस्पर्धी वैध मूल्य कार्रवाई के विभिन्न पाठ्यक्रमों की ओर इशारा करते हैं।" उपयुक्त उदाहरणों के साथ चर्चा कीजिए।

NCERT/संदर्भ: UPSC GS पेपर IV — नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा और अभिरुचि; भारत का संविधान: सिद्धांत और व्यवहार, कक्षा XI से प्रासंगिक संवैधानिक मूल्य।

मॉडल उत्तर (Model Answer)

लोक प्रशासन में नैतिक दुविधाएं (Ethical Dilemmas) शायद ही कभी सही और गलत के बीच एक सीधे विकल्प के रूप में प्रस्तुत होती हैं। अक्सर, वे ऐसी स्थितियों को शामिल करते हैं जहां दो या दो से अधिक वैध मूल्य आपस में टकराते हैं। एक लोक सेवक को गोपनीयता के साथ पारदर्शिता, पर्यावरण संरक्षण के साथ विकास, सार्वजनिक सुरक्षा के साथ व्यक्तिगत स्वतंत्रता, या प्रक्रियात्मक समानता के साथ करुणा का संतुलन बनाना पड़ सकता है।

सरकारी भूमि पर एक अवैध बस्ती का सामना कर रहे एक जिला प्रशासन पर विचार करें। कानून के शासन (Rule of Law) के लिए अतिक्रमण के खिलाफ प्रवर्तन की आवश्यकता होती है। वहीं दूसरी ओर, करुणा, गरिमा और सामाजिक न्याय के लिए संवेदनशील परिवारों पर पड़ने वाले परिणामों पर विचार करने की आवश्यकता होती है। एक विशुद्ध रूप से कठोर दृष्टिकोण कानूनी रूप से सही लेकिन सामाजिक रूप से कठोर परिणाम उत्पन्न कर सकता है, जबकि कानून की पूरी तरह से उपेक्षा करना समानता और संस्थागत विश्वसनीयता को कमजोर करेगा।

नैतिक समाधान एक कानूनी, आनुपातिक और मानवीय मार्ग की पहचान करने में निहित है—सत्यापन, उचित सूचना, जहां लागू हो पुनर्वास तंत्र और चरणबद्ध प्रवर्तन।

एक अन्य उदाहरण आपदा राहत है। सामान्य तौर पर, लाभ जारी होने से पहले सरकारी प्रक्रियाओं में दस्तावेजीकरण और सत्यापन की आवश्यकता होती है। हालांकि, एक बड़ी आपदा के दौरान, दस्तावेजीकरण आवश्यकताओं का कठोर पालन पीड़ितों तक तत्काल सहायता पहुंचने से रोक सकता है। यहाँ, प्रशासक को मानवीय तात्कालिकता के साथ प्रक्रियात्मक जवाबदेही का संतुलन बनाना चाहिए।

शामिल नैतिक मूल्य (Ethical Values Involved)

कई सिद्धांत प्रासंगिक हैं:

- **सत्यनिष्ठा (Integrity):** अधिकारी को व्यक्तिगत या राजनीतिक लाभ के लिए नियमों में हेरफेर नहीं करना चाहिए।
- **निष्पक्षता (Impartiality):** करुणा चुनिंदा पक्षपात (Selective Favouritism) नहीं बन सकती।
- **वस्तुनिष्ठता (Objectivity):** निर्णय केवल भावनाओं के बजाय साक्ष्यों पर आधारित होने चाहिए।
- **सहानुभूति/परानुभूति (Empathy):** प्रशासनिक निर्णयों के मानवीय परिणामों को समझा जाना चाहिए।
- **न्याय (Justice):** समान स्थिति वाले नागरिकों के साथ समान व्यवहार होना चाहिए।
- **आनुपातिकता (Proportionality):** प्रशासनिक प्रतिक्रिया आवश्यकता से अधिक नहीं होनी चाहिए।
- **जवाबदेही (Accountability):** असाधारण निर्णयों को उचित रूप से प्रलेखित किया जाना चाहिए और समीक्षा के लिए खुला होना चाहिए।

संवैधानिक नैतिकता (Constitutional Morality)

संविधान न्याय, स्वतंत्रता, समानता, गरिमा और बंधुत्व के मूल्यों के माध्यम से एक महत्वपूर्ण नैतिक ढांचा प्रदान करता है। इसलिए लोक सेवक प्रशासनिक नियमों को संवैधानिक सिद्धांतों से अलग नहीं मान सकते।

हालाँकि, संवैधानिक नैतिकता को व्यक्तिगत नैतिकता के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए। एक अधिकारी केवल इसलिए किसी कानून की अनदेखी नहीं कर सकता क्योंकि वह उसके व्यक्तिगत विश्वासों से टकराता है।

इसलिए आदर्श दृष्टिकोण है:

कानून + संवैधानिक मूल्य + साक्ष्य + आनुपातिकता + जनहित।

संस्थागत सुरक्षा उपाय (Institutional Safeguards)

नैतिक निर्णय लेने को निम्नलिखित के माध्यम से मजबूत किया जा सकता है:

- कारण सहित लिखित आदेश;
- पारदर्शी प्रक्रियाएं;
- स्वतंत्र समीक्षा;
- शिकायत निवारण;
- आचार संहिता (Codes of Conduct);
- हितों के टकराव (Conflict-of-Interest) के नियम;
- व्हिसलब्लोअर संरक्षण;
- नैतिक प्रशिक्षण।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence) भी मूल्यवान है क्योंकि यह अधिकारियों को पेशेवर वस्तुनिष्ठता बनाए रखते हुए प्रतिस्पर्धी दृष्टिकोणों को समझने में सक्षम बनाती है।

अंततः, नैतिक प्रशासन हर कठिन मामले में एक आदर्श समाधान खोजने के बारे में नहीं है। यह हितधारकों, प्रतिस्पर्धी मूल्यों, कानूनी बाधाओं और संभावित परिणामों की पहचान करने के बाद सबसे अधिक रक्षा योग्य (Defensible) मार्ग चुनने के बारे में है।

इसलिए एक परिपक्व लोक सेवक केवल यह नहीं पूछता:

"मुझे कानूनी रूप से क्या करने की अनुमति है?"

बल्कि यह भी पूछता है:

"कौन सा कानूनी मार्ग गरिमा, न्याय, समानता और जनहित की सबसे अच्छी रक्षा करता है?"

लोकतांत्रिक शासन में यही नैतिक विवेक (Ethical Discretion) का सार है।

समसामयिकी (Current Affairs): कथित ड्रग किंगपिन वीरेंद्र बैसोया का प्रत्यर्पण/वापसी

प्र.5 "विदेशी क्षेत्राधिकारों से भगोड़े आरोपियों की वापसी दर्शाती है कि सीमा पार संगठित अपराध से निपटने के लिए घरेलू कानून-प्रवर्तन क्षमता से कहीं अधिक की आवश्यकता है।" सीमा पार नशीले पदार्थों के नेटवर्क को ध्वस्त करने में प्रत्यर्पण (Extradition), निर्वासन (Deportation), इंटरपोल सहयोग, वित्तीय खुफिया जानकारी और अंतर्राष्ट्रीय कानूनी सहायता की भूमिका का परीक्षण कीजिए।

समसामयिकी संदर्भ:

यूएई से कथित ड्रग-नेटवर्क सरगना (Kingpin) वीरेंद्र सिंह बैसोया का प्रत्यर्पण/वापसी और सीमा पार कोकीन/नशीले पदार्थों के नेटवर्क को व्यापक स्तर पर ध्वस्त करना।

मॉडल उत्तर (Model Answer)

सीमा पार संगठित अपराध (Transnational Organised Crime) इस पारंपरिक धारणा को चुनौती देता है कि अपराध मुख्य रूप से एक घरेलू कानून और व्यवस्था की समस्या है। आधुनिक नशीले पदार्थों के नेटवर्क कई क्षेत्राधिकारों में काम कर सकते हैं, जिसमें उत्पादन, वित्तपोषण, परिवहन, वितरण और नेतृत्व अलग-अलग देशों में स्थित होते हैं। नतीजतन, ऐसे नेटवर्कों को ध्वस्त करने के लिए निरंतर अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता होती है।

यूएई (UAE) से वीरेंद्र सिंह बैसोया की हालिया वापसी इस चुनौती को रेखांकित करती है। भारतीय एजेंसियों और मीडिया रिपोर्टों द्वारा एक प्रमुख नशीले पदार्थों के मामले में कथित सरगना के रूप में वर्णित बैसोया को इंटरपोल रेड नोटिस के बाद दुबई में गिरफ्तार किया गया था और बाद में भारत वापस लाया गया। रिपोर्टों में उसकी पहचान पुणे के एक बड़े नशीले पदार्थों के मामले में एक आरोपी के रूप में और एक व्यापक ड्रग नेटवर्क से जुड़े एक अन्य भगोड़े के कथित सहयोगी के रूप में की गई है।

1. इंटरपोल सहयोग (Interpol Cooperation)

इंटरपोल रेड नोटिस प्रत्यर्पण या इसी तरह की कानूनी कार्रवाई लंबित रहने तक किसी व्यक्ति का पता लगाने और उसे अनंतिम रूप से गिरफ्तार करने का एक अंतर्राष्ट्रीय अनुरोध है। यह एक महत्वपूर्ण कानून-प्रवर्तन सहयोग तंत्र है, लेकिन इसे अंतर्राष्ट्रीय गिरफ्तारी वारंट के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए।

इसकी प्रभावशीलता निम्न पर निर्भर करती है:

- सटीक खुफिया जानकारी;
- व्यक्ति की पहचान;
- उस देश से सहयोग जहाँ व्यक्ति स्थित है;
- उस देश की घरेलू कानूनी प्रक्रियाएं।

2. प्रत्यर्पण बनाम निर्वासन (Extradition versus Deportation)

यह अंतर UPSC के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है:

- **प्रत्यर्पण (Extradition):** यह एक औपचारिक कानूनी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से एक राज्य अभियोजन या सजा के लिए दूसरे राज्य से किसी व्यक्ति के समर्पण (Surrender) की मांग करता है।
- **निर्वासन (Deportation):** यह आम तौर पर एक आब्रजन/प्रशासनिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से एक विदेशी क्षेत्राधिकार किसी व्यक्ति को अपने क्षेत्र से हटा देता है।

किसी व्यक्तिगत मामले में इस्तेमाल किया जाने वाला व्यावहारिक मार्ग लागू द्विपक्षीय व्यवस्थाओं, घरेलू कानून और परिस्थितियों पर निर्भर करता है।

3. वित्तीय खुफिया जानकारी (Financial Intelligence)

यदि वित्तीय ढांचा जीवित रहता है तो नेटवर्क के नेता को गिरफ्तार करना अपर्याप्त है। नशीले पदार्थों की कमाई को निम्नलिखित के माध्यम से भेजा जा सकता है:

- शेल कंपनियां (Shell Companies);

- अनौपचारिक मूल्य-हस्तांतरण तंत्र (जैसे हवाला);
- स्तरित लेनदेन (Layered Transactions);
- क्रिप्टोकॉरेंसी (Cryptocurrencies);
- व्यापार-आधारित मनी लॉन्ड्रिंग (Trade-based Laundering);
- फ्रंट बिजनेस।

इसलिए, एजेंसियों को नशीले पदार्थों की भौतिक आवाजाही के साथ-साथ मनी ट्रेल (धन के लेन-देन के रास्ते) का भी पालन करना चाहिए। वित्तीय व्यवधान कभी-कभी व्यक्तिगत कोरियर की गिरफ्तारी की तुलना में संगठित अपराध के लिए अधिक हानिकारक हो सकता है।

4. पारस्परिक कानूनी सहायता (Mutual Legal Assistance)

विदेशों में स्थित साक्ष्य अभियोजन के लिए आवश्यक हो सकते हैं। पारस्परिक कानूनी सहायता संधि (MLATs) और अन्य अंतर्राष्ट्रीय सहयोग तंत्र साक्ष्य, दस्तावेजों, वित्तीय रिकॉर्ड और जांच संबंधी जानकारी के वैध आदान-प्रदान को सुगम बना सकते हैं।

5. खुफिया अभिसरण (Intelligence Fusion)

बैसोया प्रकरण स्पष्ट रूप से अलग दिखने वाली जांचों को जोड़ने के महत्व को भी उजागर करता है। रिपोर्टों से संकेत मिलता है कि जांचकर्ता कथित नेटवर्क में व्यापक संपर्कों की जांच कर रहे हैं, जिसमें अन्य भगोड़ों और विदेशी स्थानों के साथ संबंध शामिल हैं।

इसलिए भारत को निम्नलिखित के बीच अधिक समन्वय की आवश्यकता है:

- नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (NCB);
- केंद्रीय जांच ब्यूरो (CBI);
- प्रवर्तन निदेशालय (ED);
- राज्य पुलिस;
- वित्तीय गुप्तचर इकाई (FIU);
- सीमा शुल्क (Customs);
- गुप्तचर एजेंसियां (Intelligence Agencies);
- इंटरपोल चैनल;
- विदेशी कानून-प्रवर्तन भागीदार।

6. "गिरफ्तारी" से "पारिस्थितिकी तंत्र के विनाश" तक (From "Arrest" to "Ecosystem Disruption")

सबसे महत्वपूर्ण रणनीतिक बदलाव व्यक्तिगत अपराधियों को लक्षित करने से हटाकर पूरे अपराधिक पारिस्थितिकी तंत्र (Ecosystem) को खत्म करने की ओर होना चाहिए:

नेतृत्व → आपूर्तिकर्ता → वित्तपोषक → परिवहनकर्ता → वितरक → भ्रष्ट सुविधाप्रदाता → डिजिटल बुनियादी ढांचा → मनी लॉन्ड्रिंग → विदेशी सुरक्षित ठिकाने।

आगे का रास्ता (Way Forward)

भारत को निम्नलिखित को मजबूत करना चाहिए:

- अंतर्राष्ट्रीय खुफिया जानकारी साझा करना;
- वित्तीय जांच;
- साइबर-फॉरेंसिक क्षमता;
- समुद्री और सीमा निगरानी;
- पारस्परिक कानूनी सहायता तंत्र;
- प्रत्यर्पण/निर्वासन सहयोग;
- अभियोजन और साक्ष्य-प्रबंधन क्षमता;
- नशीले पदार्थों की तस्करी के खिलाफ क्षेत्रीय सहयोग।

इसलिए बैसोया की वापसी केवल इसलिए महत्वपूर्ण नहीं है क्योंकि एक आरोपी व्यक्ति को भारतीय क्षेत्राधिकार में लाया गया है, बल्कि इसलिए कि ऐसे मामले अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर समन्वित आपराधिक-न्याय ढांचे के महत्व को प्रदर्शित करते हैं।

अंततः, सीमा पार नशीले पदार्थों के अपराध को केवल जब्ती या गिरफ्तारी बढ़ाकर पराजित नहीं किया जा सकता है। इसके लिए लोगों, मुनाफे, रास्तों, प्रौद्योगिकी और अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षित ठिकानों को एक साथ बाधित करने की आवश्यकता है। आंतरिक सुरक्षा के लिए एक आधुनिक संपूर्ण-नेटवर्क दृष्टिकोण का यही सार है।

